



ACHARYA M. K. KUNHJOL

Acharya M. K. Kunhjol is a Dalit social worker in Kerala.

2. Born on 8th May, 1937, as the first son of Mulappanchirangara Pattarukandam Sri Kurumban and Smt. Vallothy, Acharya Kunhjol did his Primary Education at St.Rita's L.P.S. Mudakkirai upto 5th class. He did his College Education at Sree Sankara College for Intermediate and B.Sc. from Maharajas College, Ernakulam and further at Medical College, Kozhikode, but discontinued due to financial instability.

3. Acharya Kunhjol started Public activities while he was in High School and became the College Union General Secretary at the Maharajas College. Then, he took part in Students Agitation, Liberation Struggle in Kerala which paved the way of the dismissal of CPI Government from power by the President of India. Then, he vehemently took part in the next Assembly Elections in 1960.

4. Acharya Kunhjol continued his public activities. The two faces of agitations were for land for the landless and House for the Homeless and legal protection and social justice to all the poor people irrespective of caste and religion, in the light of the world famous Preamble of the Greatest Democratic Constitution ever written in the world and the Fundamental Rights enumerated and the Articles 38 and 46. An agitation for police reformation lasted 382 days which ended with the intervention and steps taken by the then Governor of the State.

5. Acharya Kunhjol won major local land agitations with big wonder with the slogan, “Land for the Landless; the tillers of the soil must enjoy the benefit of the land.'' The slogan “tiller of the soil must enjoy the benefit of the land” given by Swamy Agamanda, who was the founder of Sree Ramakrishna Advaitha Ashram at Kalady and the Sree Sankara College, Kalady, who was hailed as the Kerala Vivekananda. Another face of agitation is the Economic Development of the poor by establishing a Socialist Society in Bharath.

6. Acharya Kunhjol is working towards the Educational Socio-cultural Sanathana Dharmic Spiritual Growth and development of all the citizens, “We the people of India''. He stands for the propagation of idea of the unification and co-operation of the entire world and human race, preserving all spiritual ways and systems without any conflict.





आचार्य एम. के. कुन्हजोल

आचार्य एम. के. कुन्हजोल केरल के एक दलित सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

2. 8 मई, 1937 को मुलापंछीरंगरा पट्टारूकंदम श्री कुरुम्बन और श्रीमती वेलोती के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में जन्मे आचार्य कुन्हजोल ने 5वीं कक्षा तक की प्राथमिक शिक्षा सेंट रीटाज एल.पी.एस. मुदक्कीरई से प्राप्त की। उन्होंने कालेज स्तर की शिक्षा श्री शंकर कॉलेज ऑफ इंटरमीडिएट से प्राप्त की तथा महाराजा कॉलेज, इर्णाकुलम से बी.एससी. की और फिर आगे की शिक्षा के लिए मेडीकल कालेज, कोझीकोड गए किंतु आर्थिक कठिनाईयों चलते उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी।

3. आचार्य कुन्हजोल ने हाई स्कूल से ही जन सेवा शुरू कर दी थी और महाराजा कॉलेज के छात्र यूनियन के महासचिव बने। उसके बाद, उन्होंने केरल में छात्र आंदोलन, मुक्ति संघर्ष में भाग लिया जिसके फलस्वरूप भारत के राष्ट्रपति ने सीपीआई सरकार को बर्खास्त कर दिया था। उन्होंने 1960 में प्रभावी ढंग से विधानसभा चुनावों में भाग लिया।

4. आचार्य कुन्हजोल ने अपने जन कार्य जारी रखे। इस आंदोलन के दो पहलू थेः विश्व में अब तक लिखे गए महानतम लोकतांत्रिक संविधान की विश्व प्रसिद्ध प्रस्तावना तथा उसमें वर्णित मौलिक अधिकारों एवं अनुच्छेद 38 और 46 के आलोक में, सभी गरीबों को उनकी जाति और धर्म पर गौर किए बगैर भूमिहीन के लिए भूमि, निराश्रित के लिए घर तथा कानूनी सुरक्षा और सामाजिक न्याय। पुलिस सुधार के लिए आंदोलन 382 दिन तक चला जो राज्य के तत्कालीन राज्यपाल के हस्तक्षेप से समाप्त हुआ था।

5. आचार्य कुन्हजोल ने "भूमि भूमिहीनों की; जमीन का लाभ जमीन जोतने वाले को मिल'', के नारे के साथ आश्चर्यजनक रूप से प्रमुख स्थानीय भू–आंदोलनों में विजय हासिल की। "जमीन का लाभ जमीन जोतने वाले को मिले" का नारा स्वामी अगमांडा ने दिया था, जिन्होंने कलाडी में श्री रामकृष्ण अद्वैत आश्रम और श्री शंकर कॉलेज, कलाडी की स्थापना की थी और उन्हें केरल का विवेकानंद कहा जाता है। आंदोलन का दूसरा पहलु भारत में समाजवादी समाज की स्थापना करके गरीबों का आर्थिक विकास करना है।

6. आचार्य कुन्हजोल सभी नागरिकों, "हम भारत के लोग" के शैक्षिक, सामाजिक–सांस्कृतिक सनातन धार्मिक आध्यात्मिक प्रगति और विकास के लिए काम कर रहे हैं। वह किसी संघर्ष के बगैर सभी आध्यात्मिक मार्गों और व्यवस्थाओं को संरक्षित करते हुए पूरी दुनिया और मानव जाति के एकीकरण और उनके बीच सहयोग के समर्थक हैं।